रहस्य कोकोस के सोने का
खज़ाना द्वीप की सत्य कथा

लेखनः सेवियर पिरोट्टा

चित्रः मार्क ओल्डरॉयड

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



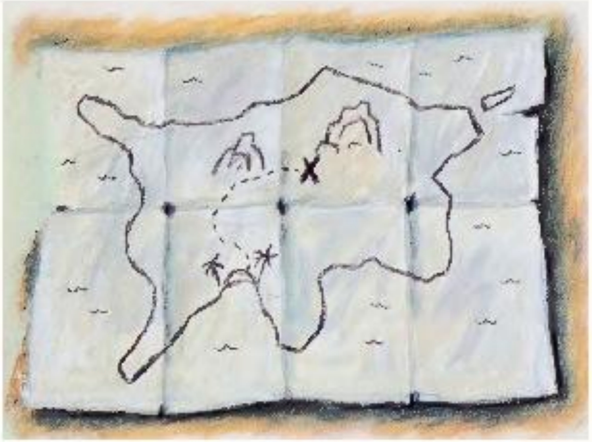
रहस्य कोकोस के सोने का

खज़ाना द्वीप की सत्य कथा

लेखनः सेवियर पिरोट्टा

चित्रः मार्क ओल्डरॉयड

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



अनुक्रम

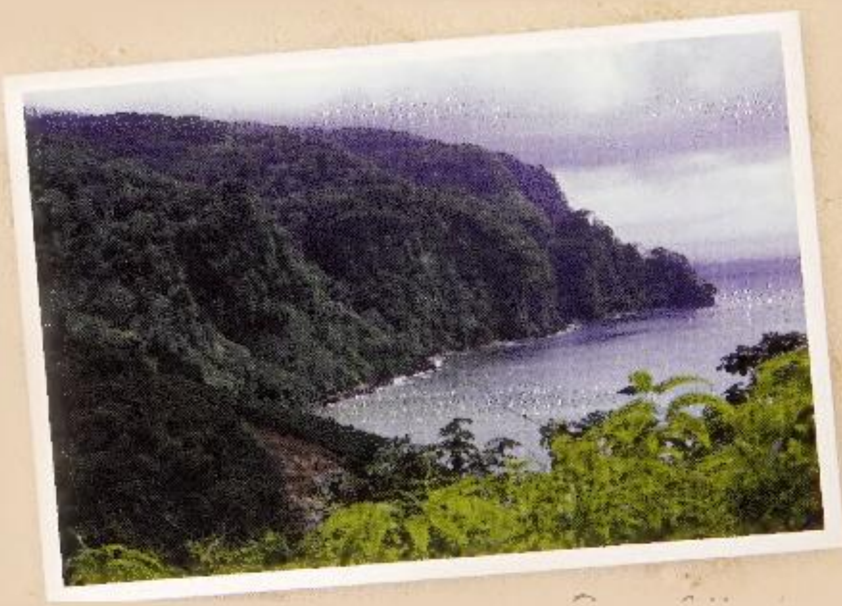
परिचय

कोकोस द्वीप प्रशान्त महासागर का एक द्वीप है। वहाँ कोई रहता नहीं है। और आज भी वहाँ पहुँचना बेहद कठिन है। इसके सबसे पास बसा देश है कोस्टा रीका, वहाँ से भी अगर नाव से चलो तो कोकोस द्वीप पहुँचने में दो दिन से भी अधिक लग सकते हैं।

द्वीप में प्रवेश कर पाने के लिए महज दो खाड़ियाँ हैं, बाकी ओर ऊँची चट्टानें हैं, जो समुद्र से ऊपर तक उठती हैं।



कोकोस द्वीप का एक झरना



कोकोस द्वीप की एक खाड़ी

कोकोस द्वीप खासा गर्म है। वहाँ हर दिन इतनी बारिश होती है कि कुछ भी नजर नहीं आता है। समूचे द्वीप में ऊष्णकटिबंधीय जंगल पसरा है। फिर क्या अचरज कि सतरहवीं और सोलहवीं शताब्दी के डाकुओं को लगता था कि वह द्वीप लूटे हुए ख़ज़ानों को गाड़ने के लिए सबसे महफ़ूज़ जगह है।

अध्याय 1

ख़त की शुरुआत

जॉन हॉकर को,

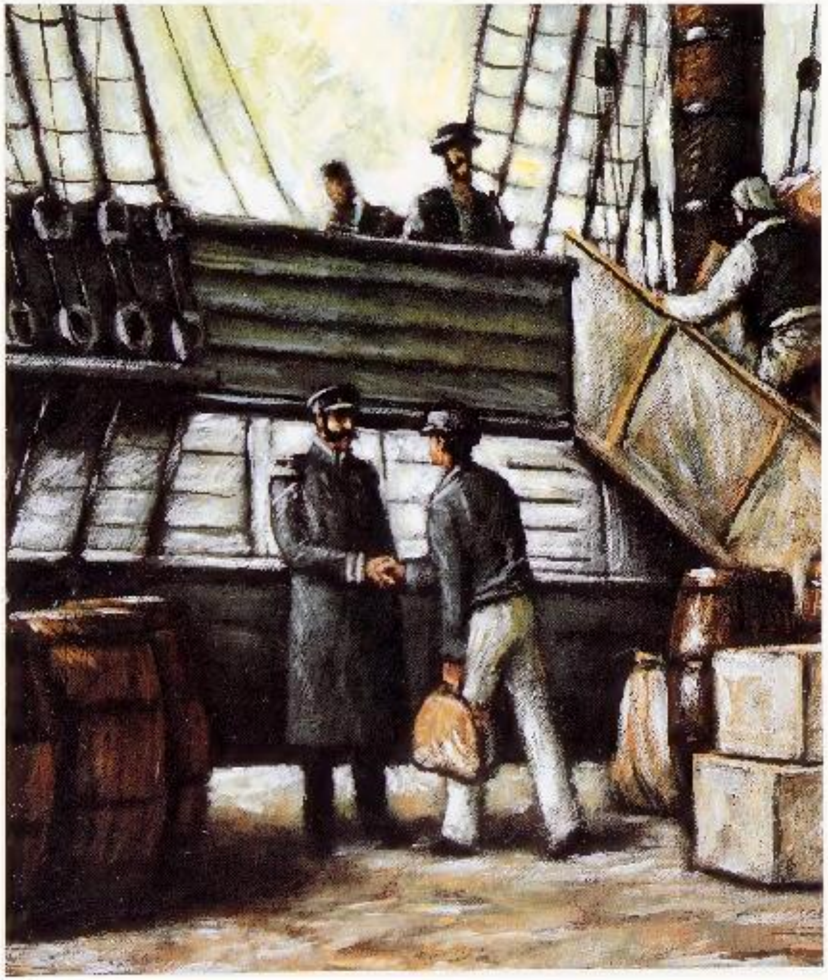
27, बैलर्डस् लेन,

पैकहैम

22, सितम्बर, 1821

प्रिय कज़न (रिश्ते का भाई),

मैं यह ख़त एक हिस्पानी जेल से लिख रहा हूँ। तुम जानते ही हो कि इस साल की शुरुआत में मैंने समुद्री सफ़र की इच्छा से घर छोड़ा था। मैं जहाज़ पर काम तलाशता हुआ एक से दूसरे जहाज़ भटकता रहा। पर किसीने मुझे काम नहीं दिया। आख़िरकार मेरी किस्मत पलटी। मिस्टर थॉमसन, जो *मेरी डियर* जहाज़ के कप्तान थे, एक ऐसे इन्सान को तलाश रहे थे जो पढ़ना-लिखना जानता हो। उन्होंने मुझे मेट (सहायक) का काम दिया।



मैं जहाज़ की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा ही था कि लंगर उठा लिया गया। *मेरी डियर* कैरिबियन की ओर बढ़ चला। मेरा तो मानो सपना ही साकार हो गया। मुझे लगा न जाने कौन से रोमांच मेरे इन्तज़ार में हैं?





अध्याय 2

कलाओ बन्दरगाह में

मेरी डियर में बिताए मेरे शुरुआती तीन सप्ताह कठिन रहे। मुझे लगातार मितली आती और मेरा जी घबराता। पर तब धीरे-धीरे मैं सहज हुआ। और इतना खुश, जितना पहले अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं था।

हमारा पहला पड़ाव था जमैका, जहाँ हमें चाय पहुँचानी थी। वहाँ से हम पेरू के लीमा में गए। वहाँ से कप्तान को लकड़ी उठानी थी।

पर जिस पल हम कलाओ के बन्दरगाह तक पहुँचे, हमें अहसास हो गया कि कुछ गड़बड़ है। हमने दूर से ही लोगों को इधर-उधर भागदौड़ करते देखा।



एक छोटी नाव हमारे जहाज़ तक आई। उस पर सवार एक हिस्पानी व्यक्ति ने जहाज़ पर आने की इजाज़त मांगी। वह एक पादरी था जिसने लम्बा सफेद चोंगा पहन रखा था। ‘‘पेरू के किसान लीमा पर चढ़ आए हैं,’’ पादरी ने हमें बताया। ‘‘वे हिस्पानी शासकों का तख़्ता-पलट करना चाहते हैं।’’

उन्हें दोष भी कौन दे सकता है? मैंने सोचा। मुझे भी यह नागवार ही गुज़रता अगर हिस्पानी लोग इग्लैण्ड पर काबिज़ हो जाते!





मिस्टर थॉमसन राज़ी हो गए, बेशक इसकी एक कीमत ले। रात को कुछ हिस्पानी पहरेदार जहाज़ पर कई सन्दूक लाए। हम भौंचक देखते रहे। उन सन्दूकों में क़िताबें या कपड़े नहीं थे। पादरी ने हमसे उनके बेशकीमती खज़ाने की रखवाली करने को कहा था!

"मेरे दोस्त और मैं लीमा छोड़ नहीं सकते," पादरी ने साफ़ किया। "पर कुछ चीज़ें हैं जिन्हें हमें किसी भी कीमत पर महफ़ूज़ रखनी हैं। क्या हम उन्हें आपके जहाज़ के तल-भण्डार में रख सकते हैं? उन्हें कहीं ले नहीं जाना है। बस आप जहाज़ को इतनी दूर ले जाएं, जहाँ से उसे कोई देख नहीं सके। और लड़ाई बन्द होने तक आप वहीं इन्तज़ार करें।"





अध्याय 3

डाकुओं की रात

"ज़रा देखो तो?" जहाज़ का ख़ानसामा फुसफुसाया। पहरेदार खज़ाना जहाज़ के तल-भण्डार में रख रहे थे। सन्दूकों में मोती और मानक भरे थे। सोने के सलीब थे जिन पर हीरे जड़े थे। कपड़ों मे लिपटी यीशू की माता मेरी की एक आदमकद मूरत थी। वह ठोस सोने से बनी थी!

"इस दुनिसा में इन्साफ़ नही है," ख़ानसामा बुदबुदाया। "हम अपने परिवार का पेट पालने के लिए हाड़तोड़ मेहनत करते हैं। और ये पादरी हैं, जो खज़ाना छिपाने के लिए भागदौड़ कर रहे हैं!"





जहाज़ के कर्मीदल के बाकी लोगों ने कुछ न कहा। हम खुले समुद्र की ओर बढ़ चले। पर मैं जानता था कि सब उस खज़ाने के बारे में सोच रहे हैं, जो अब हमारे पैरों के नीचे था।



दो दिनों के बाद *मेरी डियर* ने समुद्र के बीच सुनसान में लंगर डाला। रात का वक़्त था। आसमान तारों से अटा था। हरेक तारा उतना ही चमकदार था जितने वे हीरे-जवाहरात जो हमारे पैरों तले धरे थे।

मैं सोने की कोशिश कर रहा था, जब मैंने चीख़-पुकार और लड़ने-भिड़ने की आवाजें सुनीं।

"गज़ब!" ख़ानसामे ने कहा। हम दोनों डेक की ओर भागे।

"आप हमारे साथ हैं या नहीं?" सब कप्तान थॉमसन से चीख कर पूछ रहे थे।

"मैं तुम सबके साथ हूँ," कप्तान ने कहा।





मैंने अपनी नज़रें घुमाईं। हिस्पानी पहरेदारों को नामो-निशान नहीं था, सिवा एक टूटी तलवार के। उन्हें जहाज़ से समन्दर में फेंक दिया गया था।

"तो फिर खज़ाना हमारा है!" एक नाविक ने ऐलान किया। "हम अमीर हैं साथियों, हममें से हरेक!"

मैंने भी दूसरों के साथ अपनी खुशी ज़ाहिर की। पर तब मैंने जो कुछ हुआ था उस पर सोचा। और मेरा खून सर्द हो गया। मेरे साथियों ने खज़ाना लूट लिया था! और मैंने उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की थी। कानून की नज़र में अब मैं भी एक डाकू था।





अध्याय 4

खुले समुद्र में

"हमें खज़ाने को किसी महफूज़ जगह गाड़ देना होगा," कप्तान थॉमसन ने कहा। "और जब सब हमारे बारे में भूल जाएं, तब हम उसे खोद कर निकालने वापस लौटें।"

कर्मीदल के कई साथियों को यह ख़याल पसन्द नहीं आया। वे चाहते थे कि हाथोंहाथ बंटवारा कर दिया जाए। पर दूसरों ने उन्हें समझाया। "इस तरह का लूट का सामान दूसरों की नज़रों से बचा कर बेचा नहीं जा सकता," उन्होंने तर्क किया। "उस सोने की मूरत को तो कोई भी पहचान लेगा। और उन जड़ाऊ सलीबों को भी।"



सो हम समुद्र में आगे बढ़ चले।

"हम आख़िर जा कहाँ रहे हैं कप्तान?" मैंने पूछा।

"हम दुनिया की सबसे ख़तरनाक जगह जा रहे हैं," थॉमसन फुसफुसाया। "हम कोकोस द्वीप जा रहे हैं।"

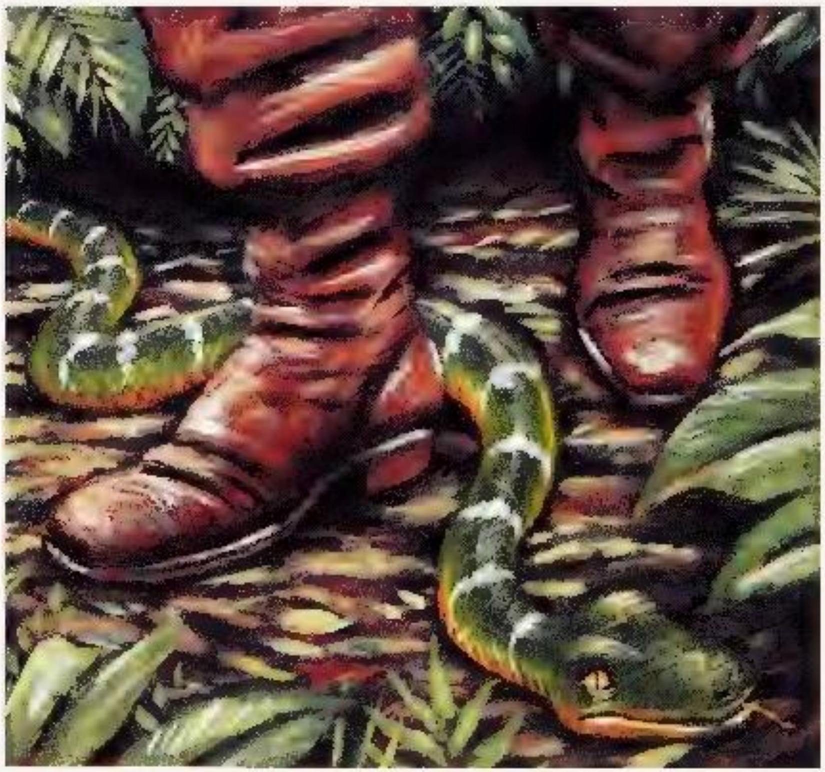


अध्याय 5

कोकोस द्वीप पर

कप्तान मज़ाक नहीं कर रहे थे। कोकोस द्वीप सचमें दुनिया की सबसे बदतर जगह थी। हमें *मेरी डियर* को बड़ी सावधानी से एक संकरी खाड़ी से द्वीप के पास ले जाना पड़ा। जब हमने लंगर डाला शार्क मछलियाँ जहाज़ के गिर्द चक्कर काट रही थीं।

जब हम खज़ाने को जंगल के बीच घसीट कर ले जा रहे थे हमारे पैरों तले साँप सरक रहे थे। हममें से कुछ को हथेली जितनी बड़ी ज़हरीली मकड़ियों ने काटा। मेरा दोस्त ख़ानसामा फलों की तलाश में गया। वह फिर हमें नज़र ही नहीं आया।





आख़िरकार हमने खज़ाना गाड़ दिया। हम कोकोस द्वीप से निकल आगे बढ़े। उस भयानक द्वीप से निकल हम खुश थे। हरेक अपने भविष्य की बड़ी-भारी योजनाएं बनाने लगा। पर बदकिस्मती से हम अपने लूटे हुए खज़ाने का मज़ा कभी न उठा सके।

अगले ही दिन एक हिस्पानी जहाज़ ने हमें धर-पकड़ा। *मेरी डियर* को घसीट कर एक हिस्पानी बन्दरगाह ले जाया गया। तुम सोच ही सकते हो कि हमें किस तरह का न्याय मिला होगा! प्यारे जॉन कल हममें से कुछ को फाँसी दी जाने वाली है।

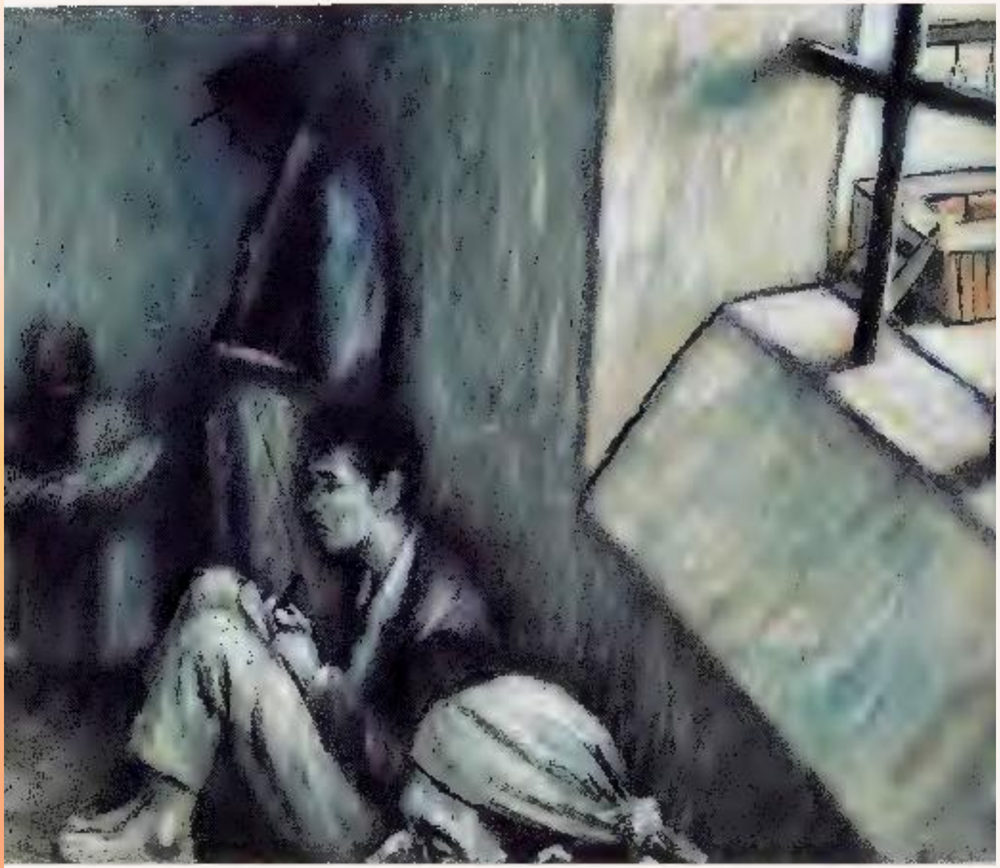




अध्याय 6

ख़त की समाप्ति

पर उम्मीद की एक किरण बाकी है। कप्तान ने बताया है कि उनकी एक योजना है। वे कोशिश कर रहे हैं कि हिस्पानी लोग हममें से कुछ को ज़िन्दा छोड़ दें। ताकि बचे हुए लोग उन्हें दिखा-बता सकें कि खज़ाना कहाँ गड़ा है।



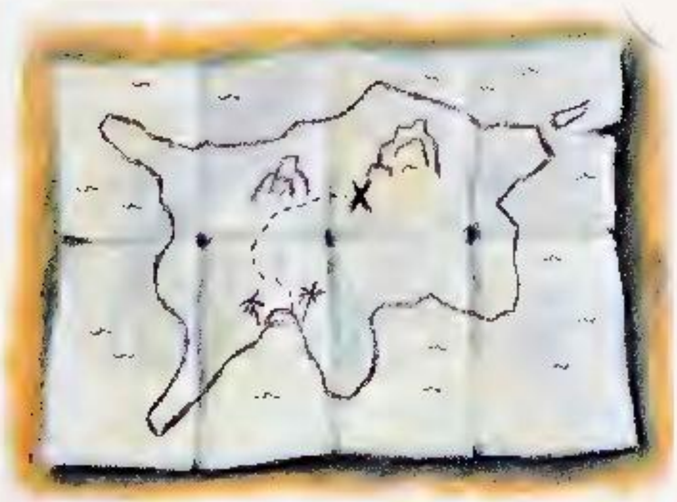
हो सकता है कि शायद मैं यहाँ से ज़िन्दा बच निकलूं।

मैं ख़त ख़त्म करते हुए हिस्पानी दारोगाओं को सूली तैयार करते सुन रहा हूँ। एक पहरेदार ने वादा किया है कि वह इस ख़त को डाक में डाल देगा।

मैं ख़त के साथ ही कोकोस द्वीप का याद से बनाया नक्शा नत्थी कर रहा हूँ। इसमें वे सारे संकेत हैं जिनके सहारे तुम गड़े सोने तक पहुँच सको। अगर मैं ज़िन्दा रहा तो हम उसे साथ मिल खोजेंगे। अगर न रहा - तो क्या पता किसी दिन तुम खुद ही कोकोस द्वीप के लिए निकलो। ऐसे में वह शानदार खज़ाना तुम्हारा होगा।

तुम्हारा कज़न

बैंजमिन हीली।



कथा की पृष्ठभूमि

जहाज़ के कर्मीदल में से कुछ सचमें बचे। कप्तान थॉमसन और उनके प्रथम सहायक को, जो इस कहानी का मुख्य पात्र है, फाँसी नहीं दी गई। हिस्पानियों को उम्मीद थी कि वे उन्हें खज़ाने तक पहुँचा देंगे। पर वे दोनों नक्शों समेत चम्पत हो गए! कहा जाता है कि बाद में थॉमसन न्यूफाउण्डलैण्ड पहुँचे और अपनी शेष ज़िन्दगी उन्होंने वहीं बिताई।

कोकोस द्वीप दुनिया का सबसे मशहूर डकैत द्वीप बन चुका है। कहा जाता है कि लेखक आर.एल. स्टीवनसन ने अपनी रचना *ट्रैज़र आइलैण्ड* को कोकोस द्वीप पर आधारित किया था।

कोकोस में छिपाए गए इस खज़ाने और दूसरे डाकुओं के खज़ानों को खोज निकालने के लिए 300 से भी अधिक अभियान आयोजित हुए! कुछ खोजियों को एक्के-दुक्के जवाहरात भी मिले - पर मुख्य खज़ाने अब तक किसीके हाथ नहीं लग सके हैं।

